3

प्रेम व आज्ञापालन

(यूहन्ना 14)

''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (आयत 15)।

प्रेरितों को अपने जाने के बाद उनके द्वारा किए जाने वाले काम को समझाकर आश्वासन देने के बाद यीशु ने उन्हें अपने लिए उनके प्रेम का स्मरण कराया। पहले उसने उनके लिए अपने प्रेम की बात बताई। उनके लिए उसके प्रेम ने उनके निराश मनों में आशा और ज्योति लाई होगी, जबकि उसके लिए उनके प्रेम से संसार के उद्धार के लिए उस बोझ को जो उसने उठाया था हल्का करते हुए उसके मन में संगीत दिया होगा।

पहली नज़र में उनके प्रेम के उसके शब्द इस प्रकार से जोड़े गए हैं, जिनका उनकी बात चीत से कोई सम्बन्ध नहीं। परन्तु उन शब्दों को और बारीकी से देखने पर हमें पता चल सकता है कि वे उसके चेलों की प्रेरणा की ओर ध्यान दिलाते हुए जिसने वही काम करना था जिसकी कल्पना उसने उनके लिए की थी, पहली और बाद की टिप्पणियों से मेल खाते हैं।

अंग्रेज़ी में केवल नौ, हिन्दी में बारह (यूनानी में आठ) शब्दों में यीशु ने अपने चेलों के साथ उसके सम्बन्ध में प्रेम और आज्ञापालन के स्थान पर ज़ोर दिया। उसने हमें एक निष्कपट अर्थात विशुद्ध प्रेम के साथ उससे प्रेम करने को कहकर मसीहियत की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक को एक संक्षिप्त वाक्य में डाल दिया।

शुद्धता

पहले हम उस प्रेम की जो हमें करना है शुद्धता को देखते हैं। अपनी टिप्पणी को शर्त के रूप में रखते हुए यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो ...'' (14:15)। वह इन प्रेरितों से और उन सब से जो प्रेम की निष्कपट भावना से उसके कामों को करने के लिए बाद में उसके पीछे चलने वाले थे, पूछ रहा था।

यीशु कह रहा था कि वह हमें किसी प्रकार का वेतन नहीं लगाएगा। इन प्रेरितों को पवित्र शास्त्र में अपने शामिल किए जाने के कारण अपने भविष्य का कुछ पता नहीं था। उन्हें उस सताव की चेतावनी की भी समझ नहीं थी, जो उनके ऊपर होने वाला था या यह कि उनके आज्ञापालन और सेवा का ढंग अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में दिखाया जाएगा। अपनी बात में यीशु मुआवज़े, पीड़ा और बलिदान से ऊपर उठकर शिष्यता को प्रेम के जहाज पर रख दिया। वह अपने चेलों से उस प्रेम के कारण जो उसके लिए उनके मनों में होना था, उसका काम करने को कह रहा था।

निश्चितता

दूसरा, हम इस प्रेम की निश्चितता को देखते हैं। यीशु ने कहा, ''... मानोगे'' (14:15)। इसमें कोई संदेह नहीं रखा गया कि उसके प्रेरित और चेले उससे प्रेम करते हैं तो क्या होने वाला है। जब प्रेम होता है, तो सच्चे मन से काम होते हैं।

यह संकेत देते हुए कि यदि मन में प्रेम हो तो आज्ञा मानना आसान होता है, हमारे प्रभु ने क्रिया का इस्तेमाल भविष्यकाल में किया। जहां प्रेम होगा, वहां आज्ञा मानना होता ही है। प्रेम इस पर बहस नहीं करता कि यीशु की आज्ञा मानी जाए या नहीं। प्रेम करने वाला अपनी इच्छा को जीवन के सबसे बड़े सौभाग्य के रूप में यीशु की इच्छा के आगे सौंप देता है। वह यीशु की आज्ञाओं को एक बोझ के रूप में नहीं बल्कि आशीष के रूप में देखता है।

स्थिरता

तीसरा, हम इस प्रेम की स्थिरता को देखते हैं। यीशु ने कहा, ''... मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (14:15)। वह एक जीवनशैली अर्थात दिनचर्या में की जाने वाली बात की ओर ध्यान दिला रहा था। सच्चा प्रेम थोड़े समय का प्रयास नहीं बल्कि यह मसीह के पदचिह्नों में बिना थके चलते रहना है।

प्रेम की पहचान स्थिरता से होती है। यीशु के पीछे चलना भावुक होना नहीं बल्कि यह तो मन का समर्पण है जो केवल प्रेम से ही आ सकता है। इसमें अपने-अपने क्रूस को उठाकर उसके पीछे चलना है। जब भी हम अपना इनकार करते हैं तो हम *त्याग करते* हैं। जब हम अपने-अपने क्रूस को उठाने का निश्चय करते हैं तो हम *आगे बढ़ते* हैं जब हम उसके पीछे चलते हैं तो हम *स्थिर रहते* हैं। (देखें मत्ती 16:24.)

प्राथमिकता

चौथा, हम इस प्रेम की प्राथमिकता को देखते हैं। यीशु ने कहा, ''... मेरी आज्ञाओं'' (14:15)। सच्चा प्रेम सपना या अनिश्चित नहीं; यानी यह जीवन के हर ढंग को मान लेना नहीं है। बल्कि यह विशिष्ट, समर्पित और वास्तविक है। यीशु से प्रेम करने वाला व्यक्ति मार्ग दिखाने वाले तारे की तरह ईश्वरीय आज्ञाओं का इस्तेमाल करते हुए अपने काम का नक्शा बनाता है।

सारांश

यीशु ने निर्देश दिए, उसके लिए अपने प्रेम के कारण प्रेरितों ने उन निर्देशों को उन लोगों के हाथों में देना था और मरते दम तक उन्हें मानना था। यीशु ने हमें बता दिया है कि हमें क्या करना है और प्रेम हमें उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए उकसाता है। यीशु आज्ञा देता है और प्रेम आज्ञा मानता है। यीशु बात करता है और प्रेम श्रद्धा से सुनता है।

यीशु को क्या चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर यूहन्ना 14:15 में उसके लघु कथन में पाया जाता है। उसका काम एक बड़ी सच्चाई पर टिका है और वह यह है कि उसके चेले उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए प्रेम से बंधे हैं।

''जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करने वाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है। जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं'' (1 यूहन्ना 5:1-3)।

''जिस के पास मेरी आज्ञाएं हैं और व उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा'' (यूहन्ना 14:21)।

''यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं वरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा'' (यूहन्ना 14:23, 24)।